संतों की सलाह

AUDIO

आया था किस काम से, सोया चादर तान। तुरत संभल ए गाफिल, अपना आप पहचान॥

तूने रात गंवाई सोय के, दिवस गंवाया खाय के। हीरा जन्म अमोल सा, कौड़ी बदले जाय॥

दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करै न कोय। जो सुख में सुमिरन करे दुःख काहे को होय॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय। टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ परि जाय॥

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में प्रलय होएगी,बहुरि करेगा कब॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप। अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥

दुर्बल को न सताईये, वाकी मोटी हाय। मरी खाल की स्वास से, लोह भसम हुई जाये ॥

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय। रहिमन बिगरे द्रूध को, मथे न माखन होय॥

रहिमन निज मन की व्यथा, मन में राखो गोय। सुनि इठलैहैं लोग सब, बाटि न लैहै कोय॥

रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि॥

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय। बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥

करनी कर तू क्यों डरे. करके क्यों पछताये। तुने बोया पेड़ बबुल का, आम कहाँ से आये।।

चाह गयी चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह । जिनको कछु ना चाहिए, वे साहन के साह ॥

कबीरा खड़ा बाज़ार में, मांगे सबकी खैर। ना काहू से दोस्ती,न काहू से बैर ॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥

जो बड़ेन को लघु कहें, नहीं बड़ेन घटि जाहिं। गिरधर मुरलीधर कहें, कछु दुःख मानत नाहिं